सत्यमेव जयते
भारत सरकार
शिक्षा मंत्रालय

विकसित भारत अभियान
100 YEARS
1947 TO 2047

कला उत्सव

विद्यया ऽमृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT

samriddhi

दिशानिर्देश
Guidelines
2025

samriddhi

शिक्षकों द्वारा कला समेकित शैक्षणिक अभ्यास

Art Integrated Pedagogical Practices by Teachers

समृद्धि 2025 : दिशानिर्देश

SAMRIDDHI 2025 : Guidelines

जुलाई 2025

आषाढ़ 1947

PD 3H BS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2025

सचिव, प्रकाशन प्रभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित।

विषय-सूची

1. समृद्धि : एक परिचय ..... 1 – 5

2. 'समृद्धि 2025' की विषयवस्तु ..... 6 – 7

3. समृद्धि में प्रतिभागिता हेतु सामान्य दिशानिर्देश ..... 8 – 9

4. समृद्धि में प्रतिभागिता हेतु पात्रता..... 10

5. मूल्यांकन मापदंड..... 11

6. शिक्षकों द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाले प्रपत्रों का विवरण..... 12 – 13

Contents

1. *Samriddhi* - An Introduction ..... 14 – 18

2. Theme of Samriddhi 2025 19

3. General Guidelines for Participants of *Samriddhi* 20

4. Eligibility for Participants of *Samriddhi* 21

5. Evaluation Criteria 22

6. Details of forms to be submitted by the teachers ..... 23 – 24

1. समृद्धि : एक परिचय

समृद्धि शिक्षकों के लिए कला उत्सव के अंतर्गत आयोजित की जाने वाली राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता है। इसका उद्देश्य माध्यमिक स्तर (9 – 12) के पाठ्यक्रम पर आधारित उन कला समेकित पद्धतियों को को प्रदर्शित करना है जिन्हें शिक्षकों द्वारा विकसित एवं प्रयुक्त किया गया है। शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग द्वारा, माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कलात्मक प्रतिभा को पोषित करने एवं उन्हें मंच प्रदान करने के उद्देश्य से वर्ष 2015 में कला उत्सव का आरंभ किया गया था तथा 'समृद्धि' इसी उद्देश्य की पूर्ति की ओर बढ़ाया गया एक कदम है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* एवं विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.–एस.ई.) 2023 की अनुशंसाओं के अनुरूप, 'समृद्धि' का उद्देश्य उन शिक्षकों के योगदान को पहचानना एवं प्रोत्साहित करना है, जिन्होंने अलग-अलग विषयों के शिक्षण को कला-आधारित बनाकर शिक्षण अनुभवों को सफलता प्रदान करने का कार्य किया है।

कला एवं वैयक्तिक विकास

कला किसी व्यक्ति और उसके समाज के अनुभवों एवं प्रभावों का कुल योग होती है, जिसे विभिन्न दार्शनिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक दृष्टिकोणों के आधार पर समझा जा सकता है। व्यक्ति का भौगोलिक परिवेश, उसकी सामाजिक परिस्थिति एवं उसकी सांस्कृतिक समझ का परिलक्षण उसकी कलात्मक अभिव्यक्तियों में होता है। यह संबंध केवल संयोग नहीं है, बल्कि मानव सभ्यता के विकास की एक मौलिक विशेषता है। पहाड़ी इलाकों में पत्थर एवं लकड़ी की मूर्तिकला तथा वास्तुकला का विकास हुआ, जैसे– हिमाचल प्रदेश की काष्ठ कला 'काठ-कुनी', उत्तराखंड की पत्थर की नक्काशी 'लिखाई' एवं कश्मीर की विशिष्ट वास्तुकला

शैली 'खतमबंद' एवं 'पिंजराकारी'। मैदानी भागों में मिट्टी के बर्तन एवं चित्रकारी की परंपरा फली-फूली है, जैसे– बिहार की मधुबनी चित्रकला, पंजाब की फुलकारी एवं उत्तर प्रदेश की चिकनकारी। समुद्री तटों पर शंख, सीप एवं मछली के आकार की कलाकृतियाँ बनती हैं। दक्षिण के तटवर्ती राज्यों की समुद्री शिल्पकला इसका प्रमाण है। वहीं रेगिस्तानी क्षेत्रों में रेत की मूर्तियाँ एवं धातु कार्य की कलाएँ विकसित हुईं, जैसे राजस्थान की रंग-बिरंगी कठपुतलियाँ, धातु शिल्प एवं मरुस्थलीय चित्रकला। स्थानीय जलवायु, उपलब्ध प्राकृतिक संसाधन एवं भौगोलिक विशेषताएँ न केवल कला की सामग्री को प्रभावित करती हैं बल्कि उसके रंग-संयोजन, विषयवस्तु, तकनीकी पद्धति एवं शैलीगत विशेषताओं को भी गहराई से आकार देती हैं। इस प्रकार प्रत्येक क्षेत्र की अपनी विशिष्ट कलात्मक पहचान बनती है जो उस स्थान की प्राकृतिक सुंदरता, सामाजिक परंपराओं एवं सांस्कृतिक मूल्यों को दर्शाती है। उपरोक्त उदाहरणों को विभिन्न विषयों के साथ समेकित करना ही समृद्धि का मूल उद्देश्य है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं कला समेकित शिक्षा— एक परिवर्तनकारी दृष्टिकोण

कला केवल सौंदर्य की अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि यह मानवीय संवेदनाओं, सामाजिक मूल्यों एवं सांस्कृतिक पहचान की वाहक भी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस व्यापक दृष्टिकोण को अपनाते हुए यह स्वीकार करती है कि आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता एवं सांस्कृतिक जागरूकता के विकास में कलाएँ अपरिहार्य भूमिका निभाती हैं।

यह नीति शिक्षा के प्रति एक समग्र एवं बहुविषयक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करती है, जहाँ दृश्य कला, प्रदर्शन कला एवं अन्य रचनात्मक अभिव्यक्तियाँ पाठ्यचर्या का अभिन्न अंग हों तथा उन्हें अपने आस-पास के वातावरण को समझने एवं स्थानीय संसाधनों के प्रयोग के लिए प्रेरित करती है। इसका लक्ष्य केवल शैक्षणिक उपलब्धि नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को भारतीय ज्ञान परंपरा से जोड़ते हुए उनके समग्र कल्याण, व्यक्तिगत विकास एवं उनमें इक्कीसवीं सदी के आवश्यक कौशलों का विकास माना है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार, "कला समेकन (आर्ट इंटीग्रेशन) एक पार-पाठ्यचर्या शैक्षणिक दृष्टिकोण है, जिसमें विविध विषयों की अवधारणाओं के अधिगम आधार के रूप में कला एवं संस्कृति के विभिन्न अवयवों का उपयोग किया जाता है।" यह दृष्टिकोण विशेष रूप से भारतीय संदर्भ में अत्यधिक महत्वपूर्ण है, जहाँ प्रत्येक भौगोलिक क्षेत्र की अपनी समृद्ध एवं विशिष्ट कलात्मक परंपराएँ हैं। यह शिक्षा को न केवल आनंदपूर्ण बनाता है बल्कि भारतीय कला एवं संस्कृति के समावेश से विद्यार्थियों में भारतीयता की भावना को भी जगाता है।

कला समेकित शिक्षणशास्त्र (Art Integrated Pedagogy) की व्यापक संकल्पना

कला समेकित शिक्षणशास्त्र एक नवाचारपूर्ण एवं रचनावादी शिक्षण पद्धति है जो 'कलाओं के माध्यम से' (through the arts) एवं 'कलाओं के साथ' (with the arts) सीखने पर आधारित है। यह एक नवोन्मेषी

शैक्षिक दृष्टिकोण है, जो पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों की सीमाओं को पार कर शिक्षा को अधिक समग्र, अर्थपूर्ण एवं आनंदमय अनुभव में परिवर्तित करता है। इस पद्धति में कला केवल एक सहायक उपकरण नहीं है, बल्कि सीखने का प्राथमिक माध्यम एवं पाठ्यक्रम के किसी भी विषय की जटिल अवधारणाओं को समझने की मुख्य कुंजी है।

यह दृष्टिकोण तीन महत्वपूर्ण स्तरों पर कार्य करता है—

संज्ञानात्मक स्तर— विद्यार्थी कला के माध्यम से अमूर्त अवधारणाओं को मूर्त रूप में समझते हैं, जिससे उनकी स्मृति में जानकारी अधिक स्थायी रूप से संगृहीत होती है।

भावनात्मक स्तर— कलात्मक गतिविधियाँ विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का विकास करती हैं एवं उन्हें अपनी संवेदनाओं को व्यक्त करने के विविध आयाम प्रदान करती हैं।

सामाजिक स्तर— सामूहिक कलात्मक गतिविधियाँ सहयोग, संवाद एवं सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देती हैं।

यह पद्धति केवल कला का उपयोग करने से कहीं अधिक व्यापक प्रक्रिया है— यह विद्यार्थियों में कला के प्रति गहरी समझ, सांस्कृतिक गौरव एवं सराहना विकसित करने का एक समग्र दृष्टिकोण है। दृश्य कलाएँ (चित्रकारी, मूर्तिकला, मिट्टी की मॉडलिंग, कागज शिल्प, मुखौटा निर्माण, धरोहर शिल्प, ग्राफिक्स, एनीमेशन आदि) एवं प्रदर्शन कलाएँ (संगीत, नृत्य, रंगमंच, कठपुतली, फिल्म निर्माण आदि) दोनों के अनुभव न केवल विषयगत समझ को बेहतर बनाते हैं बल्कि समग्र व्यक्तित्व विकास को भी संभव बनाते हैं। इस प्रकार कलाएँ सीखने का प्राथमिक स्रोत बन जाती हैं।

कला समेकित शिक्षणशास्त्र की विशेषताएँ

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 कला समेकित शिक्षणशास्त्र को विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन, रचनात्मकता एवं समग्र विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक दृष्टिकोण के रूप में परिभाषित करता है। कला समेकित शिक्षणशास्त्र की प्रमुख विशेषताओं में शामिल हैं—

1. **कला का समेकन**– विषय की अवधारणाओं के साथ कला रूपों का प्रभावी मिश्रण।
2. **विद्यार्थी की प्रतिभागिता**– सक्रिय सहभागिता एवं व्यावहारिक अनुभव।
3. **अनुभवात्मक शिक्षा**– वास्तविक जीवन के संदर्भों में सीखना।
4. **आलोचनात्मक समझ का विकास**– गहन चिंतन एवं विश्लेषण की क्षमता।

शिक्षकों के मुख्य दायित्व

1. **सांस्कृतिक मध्यस्थ**– शिक्षकों को स्थानीय कलाकारों एवं शिल्पकारों के साथ जुड़कर पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक पाठ्यक्रम में समाहित करना होता है।

2. **भौगोलिक संवेदनशीलता**– शिक्षकों को भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार शैक्षणिक रणनीतियाँ बनानी पड़ती हैं। उदाहरण के लिए, हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में लयकारी गणितीय अवधारणाओं को स्पष्ट कर सकती है। इस प्रकार विद्यार्थी संगीत का आनंद लेते हुए गणित भी समझ सकते हैं।

3. **रचनावादी दृष्टिकोण**– कला समेकित शिक्षणशास्त्र में शिक्षक निम्नलिखित रचनावादी पहलुओं को सुनिश्चित करते हैं–

- विद्यार्थियों के पूर्व अनुभव एवं ज्ञान पर आधारित शिक्षण।
- कलाओं द्वारा व्यावहारिक अधिगम हमेशा रूचिकर होता है।
- एक-दूसरे से सीखने के अवसर प्रदान करना।
- स्व-मूल्यांकन एवं सहपाठियों द्वारा मूल्यांकन पर बल देना।

4. **समावेशी शिक्षा**– राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार शिक्षकों को ऐसी शैक्षिक पद्धतियों का समर्थन करना चाहिए जो समावेशी हों और जिनसे विभिन्न प्रकार के विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके।

समृद्धि प्रतियोगिता का उद्देश्य

रचनात्मक अभिव्यक्तियों को मूल विषयों में समेकित करके, माध्यमिक स्तर पर शिक्षक कला समेकन को निम्नलिखित रूप से प्रभावी तौर पर लागू कर सकते हैं—

समृद्धि प्रतियोगिता का लक्ष्य ऐसे शिक्षकों को सम्मानित करना है जो—

- स्थानीय भौगोलिक विशेषताओं एवं कला परंपराओं को आधुनिक शिक्षा पद्धति के साथ सफलतापूर्वक समेकित करते हैं।
- विद्यार्थी-केंद्रित, अनुभवात्मक एवं समावेशी शिक्षण पद्धतियों को अपनाते हैं।
- कला के माध्यम से आलोचनात्मक चिंतन, रचनात्मकता एवं सहयोग की संस्कृति विकसित करते हैं।
- भारतीय कला परंपरा एवं संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन में योगदान देते हैं।
- पाठ्यचर्या में स्थानीय शिल्प/कलाएँ एवं खिलौनों तथा स्थानीय संसाधनों का शिक्षण हेतु समावेश करते हैं (भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित)।

- विद्यार्थियों की सक्रिय एवं आनंददायक सहभागिता सुनिश्चित करते हैं एवं उनमें समालोचनात्मक चिंतन को बढ़ावा देते हैं।
- कला को परिणाम के बजाय, एक प्रक्रिया के रूप में सम्मिलित करते हैं।

इस प्रकार समृद्धि प्रतियोगिता न केवल शिक्षकों को प्रोत्साहित करती है, बल्कि शिक्षा एवं संस्कृति के पारस्परिक संबंधों को सुदृढ़ता देते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लक्ष्यों को साकार करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

2. 'समृद्धि 2025' की विषय-वस्तु

'समृद्धि' 2025 की विषयवस्तु 'कला के माध्यम से समावेशी शिक्षा' है, जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के दृष्टिकोण में गहराई से अंतर्निहित एक प्रमुख अवधारणा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 सभी शैक्षिक निर्णयों के केंद्र में समानता एवं समावेशन को स्थान देती है। यह शैक्षणिक प्रक्रियाओं में कला का समेकन करके सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समूहों (एस.ई.डी.जी.) की भागीदारी एवं उनकी सफलता की राह के अवरोधकों को दूर करने का आह्वान करती है, जिसमें लड़कियाँ एवं महिलाएँ, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग एवं अल्पसंख्यक समुदाय, दिव्यांग विद्यार्थी, दूर-दराज एवं वंचित क्षेत्रों के विद्यार्थी तथा अत्यंतनिर्धन परिस्थितियों में जीवन-यापन करने वाले विद्यार्थी सम्मिलित हैं। (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, 6.1) यह नीति समावेशी स्कूल संस्कृति, पाठ्यचर्या एवं शिक्षणशास्त्र के माध्यम से विद्यार्थियों को संवेदनशील बनाने पर बल देती है जिसमें सहानुभूति, विविधता के प्रति सम्मान, अहिंसा एवं वैश्विक नागरिकता जैसे मानवीय मूल्य सम्मिलित हैं। यह कला एवं रचनात्मक अभिव्यक्ति के महत्व को भी रेखांकित करती है, जो विद्यार्थियों की संपूर्ण क्षमता को बौद्धिक, सामाजिक एवं भावनात्मक रूप से विकसित करने में सहायक है। (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, 6.20)

'समृद्धि' का उद्देश्य शिक्षकों को इस प्रकार सक्षम बनाना है कि वे कला को समावेशी शिक्षण पद्धतियों से जोड़ सकें जिससे सभी बच्चों, विशेषकर वंचित वर्ग के बच्चों के लिए सीखने का परिवेश अधिक सुलभ, आकर्षक एवं सार्थक बन सके। यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के दृष्टिकोण के अनुरूप है, जो न केवल बुनियादी साक्षरता एवं संख्यात्मकता को विकसित करती है, बल्कि प्रत्येक विद्यार्थी में आलोचनात्मक चिंतन,

समस्या-समाधान एवं भावनात्मक बुद्धिमत्ता भी विकसित करती है। समावेशन एक विकल्प नहीं है; यह एक आवश्यकता है। कला के माध्यम से समावेशी शिक्षा पर अपने फोकस के साथ, समृद्धि एक ऐसे शैक्षिक भविष्य के लिए प्रतिबद्ध है, जहाँ सभी विद्यार्थियों को समान अवसर प्राप्त हों।

सोहराय कला

3. 'समृद्धि' में प्रतिभागिता हेतु सामान्य दिशानिर्देश

- प्रत्येक राज्य/केंद्रशासित प्रदेश/के.वी.एस./एन.वी.एस./ई.एम.आर.एस. के माध्यमिक शिक्षकों की कुल संख्या के अनुपात में प्रविष्टियाँ स्वीकार की जाएंगी। प्रविष्टियों की अनुमोदित संख्या की अग्रिम सूचना सभी नोडल अधिकारियों को प्रेषित की जाएगी। बड़े राज्यों से एक से अधिक टीमें भाग ले सकती हैं।
- एक टीम में अधिकतम दो शिक्षक भाग ले सकते हैं— प्रमुख प्रविष्टि माध्यमिक स्तर (कक्षा 9 से 12) में पढ़ाने वाले विषय शिक्षक की होगी एवं दूसरा शिक्षक (वैकल्पिक) उसी विद्यालय से, दृश्य कला/संगीत/नृत्य/नाट्य विषय का नियमित शिक्षक हो सकता है।
- जिन शिक्षकों ने समृद्धि 2024 की राष्ट्रीय प्रतियोगिता में भाग लिया था वे समृद्धि 2025 में प्रतिभागिता के लिए मान्य नहीं होंगे।
- प्रतिभागियों को अपनी कक्षा में किए गए कार्य पर आधारित एक परियोजना प्रस्ताव पहले से प्रस्तुत करना होगा, जिसमें किसी भी विषय-वर्ग (विज्ञान, मानविकी, भाषाएँ, गणित, वाणिज्य आदि) के किसी भी विषय क्षेत्र को ललित कलारूपों की किसी कलात्मक अभिव्यक्ति के सौंदर्यबोध के साथ समाहित किया गया हो।
- परियोजना प्रस्ताव शिक्षक के कक्षा शिक्षण अभ्यास पर आधारित होगा, जिसका संबंधित विद्यालय के प्राचार्य द्वारा सत्यापित होना अनिवार्य है।

- प्रस्तुति में किसी भी कला रूप (दृश्य कला/संगीत/नृत्य/नाट्य) को समेकित किया जा सकता है।
- आई.सी.टी. (ICT) के उपयोग की अनुमति होगी।
- परियोजना प्रस्ताव 500 शब्दों से अधिक का नहीं होना चाहिए। (फॉन्ट– कोकिला, फॉन्ट साइज– 16) इसमें प्रस्तुति की प्रक्रिया एवं मुख्य विशेषताओं को रेखांकित किया जाना चाहिए तथा साथ में कक्षा - अभ्यास का फोटोग्राफ (JPG फॉर्मेट)/वीडियो लिंक (MP4 फॉर्मेट) होना चाहिए। वीडियो की अधिकतम अवधि 3–4 मिनट होनी चाहिए।
- परियोजना प्रस्ताव एवं प्रस्तुति की भाषा हिंदी या अंग्रेज़ी में होनी चाहिए।
- प्रयुक्त सभी शिक्षण-अधिगम सामग्री (TLM) का उल्लेख प्रस्ताव में किया जाना अनिवार्य है। विद्यार्थियों की सहभागिता का स्तर स्पष्ट रूप से दर्शाया जाना चाहिए। प्रयोग की गई कला विधि/साज-सज्जा विद्यार्थियों की आयु के अनुकूल होनी चाहिए। राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में प्रत्येक टीम को कम से कम 3 एवं अधिकतम 6 प्रॉप्स (मंच सामग्री) रखने की अनुमति है। निर्धारित सीमा से अधिक प्रॉप्स (मंच सामग्री) का उपयोग अंक में कटौती का कारण बन सकता है।
- प्रस्तुति के लिए 20 मिनट एवं निर्णायक मंडल से संवाद के लिए 5 मिनट निर्धारित हैं। (कुल समय– 25 मिनट)
- सभी प्रविष्टियों को प्रमाणित करने के बाद नोडल अधिकारी द्वारा *राष्ट्रीय समन्वयक*, कला उत्सव को कम से कम 15 दिन पूर्व भेजा जाएगा।
- सभी महत्वपूर्ण दिशानिर्देश, परिपत्र, प्रपत्र आदि कला उत्सव की आधिकारिक वेबसाइट https://kalautsav.ncert.gov.in पर अपलोड किए जाएँगे। कृपया वेबसाइट को नियमित रूप से देखते रहें।

4. 'समृद्धि' में प्रतिभागिता हेतु पात्रता

- कक्षा 9, 10, 11 एवं 12 के शिक्षक, जो किसी भी राज्य या केंद्रीय बोर्ड से जुड़े राजकीय, राजकीय अनुदान प्राप्त या निजी विद्यालयों में शिक्षण करते हैं, वे समृद्धि (2025–26) में प्रतिभागिता कर सकते हैं।
- केंद्रीय सरकारी संगठनों जैसे– केंद्रीय तिब्बती स्कूल प्रशासन (सी.टी.एस.ए.), प्रायोगिक बहुद्देशीय विद्यालय (डी.एम.एस.), राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.), रेलवे, सीमा सुरक्षा बल (बी.एस.एफ.), केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सी.आर.पी.एफ.), सेना, वायु सेना, एवं अन्य संस्थाएं, जो राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों में स्थित हैं, वे जिला एवं राज्य स्तर पर प्रतियोगिता में प्रतिभागिता करेंगी एवं राज्य स्तर पर विजयी टीमें राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिभागिता करेंगी।
- केंद्रीय विद्यालय संगठन (के.वी.एस.), नवोदय विद्यालय समिति (एन.वी.एस.) एवं एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय (ई.एम.आर.एस.) अपनी आंतरिक प्रतियोगिताएँ आयोजित करेंगे एवं उनकी विजयी टीमें राष्ट्रीय स्तर पर अलग-अलग टीमों के रूप में प्रतिभागिता करेंगी। इस प्रकार, राष्ट्रीय स्तर पर कुल 39 टीमें भाग लेंगी (28 राज्य+8 केंद्रशासित प्रदेश+के.वी.एस.+एन.वी.एस.+ ई.एम.आर.एस)।
- प्रतिभागी शिक्षकों को अपने विद्यालय में कम से कम दो वर्षों का शिक्षण अनुभव होना चाहिए।

टिप्पणी

- सभी नोडल अधिकारियों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि जिला एवं राज्य स्तर पर सभी विद्यालय प्रतिभागिता करें, ताकि रचनात्मक एवं सक्षम शिक्षकों का चयन किया जा सके।
- पुरस्कार राशि सीधे विजयी टीमों के खातों में स्थानांतरित की जाएगी, न कि राज्य/केंद्रशासित प्रदेश/ एन.वी.एस./के.वी.एस./ई.एम.आर.एस. के माध्यम से, ताकि इसका समय पर वितरण सुनिश्चित हो सके।

5. मूल्यांकन मापदंड— कला समेकित शिक्षणशास्त्र की प्रतियोगिता

सामग्री/विषय (5) कला एवं शिल्प के संदर्भ में योजना की उपयुक्तता (15)	शिक्षणशास्त्र की प्रासंगिकता (पर्यावरण/संस्कृति/ स्थानीय कला एवं शिल्प से जुड़ाव)	विद्यार्थियों की कला अनुभव में सहभागिता	प्रक्रियाएँ	प्रस्तुति कौशल	कुल अंक
20	20	20	20	20	100

पुरस्कार राशि

सभी विजेताओं (प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय) को प्रत्येक श्रेणी में एक नकद पुरस्कार*, एक ट्रॉफी एवं एक पदक प्रदान किया जाएगा। समूह स्पर्धाओं के विजेता प्रतिभागियों के लिए नकद पुरस्कार टीम के सभी सदस्यों में समान रूप से वितरित किया जाएगा तथा इसके अतिरिक्त दो विशिष्ट पुरस्कार (₹ 5,000/- नकद राशि) भी दिए जाएंगे। नकद पुरस्कार इस प्रकार हैं—

प्रथम पुरस्कार	:	₹ 25,000/-
द्वितीय पुरस्कार	:	₹ 20,000/-
तृतीय पुरस्कार	:	₹ 15,000/-
विशिष्ट पुरस्कार	:	₹ 5,000/-

- पुरस्कार राशि को टीम सदस्यों में समान रूप से बाँटा जाएगा।
- पुरस्कार राशि सीधे पुरस्कृत शिक्षकों के खातों में स्थानांतरित की जाएगी।
- सभी प्रतिभागियों को राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता भागीदारी के लिए प्रमाणपत्र दिया जाएगा।
- किसी भी राज्य/केंद्रशासित प्रदेश/के.वी.एस./एन.वी.एस./ई.एम.आर.एस. की एक से अधिक टीम की प्रतिभागिता की स्थिति में उसे दो से अधिक पुरस्कार नहीं दिए जाएंगे।

** यह उल्लेख करना उचित होगा कि प्रदान किया गया नकद पुरस्कार विजेताओं के खाते में डिजिटल रूप से स्थानांतरित किया जाएगा।*

6. शिक्षकों द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाले प्रपत्रों का विवरण

प्रपत्र - अ

विवरण	विषय शिक्षक	कला शिक्षक
नाम		
पासपोर्ट आकार का फोटो		
जन्म तिथि		
स्थायी पता		
आधार नंबर		
ईमेल		
मोबाइल नंबर		
पदनाम		
पढ़ाए जा रहे विषय एवं कक्षाएँ		
विद्यालय का नाम एवं पता		
विद्यालय का UDISE कोड		
नियुक्ति की तिथि		
वर्तमान भूमिका में अनुभव		
श्रेणी (सामान्य/ओ.बी.सी./एस.सी./एस.टी.)		
दिव्यांग (हाँ/नहीं)		
बैंक विवरण		
PAN नंबर		
बैंक का नाम		
खाता नंबर		
IFSC कोड		
बैंक पासबुक या कैंसिल चेक की फोटो		

समृद्धि हेतु अवधारणा नोट का प्रारूप

कृपया प्रस्तुति का प्रस्ताव लेख संलग्न करें, जिसमें प्रस्तुति की प्रक्रिया एवं महत्वपूर्ण विशेषताओं को स्पष्ट किया गया हो।

(फॉन्ट– कोकिला, फॉन्ट साइज– 16, शब्द सीमा– 500 शब्द अधिकतम)

गतिविधि का विवरण

प्रपत्र - ब

प्रतियोगिता में भाग लेने वाले शिक्षक प्रतिभागियों को गतिविधि का विवरण निम्नलिखित प्रारूप में भरना होगा—

विवरण	विषय शिक्षक	कला शिक्षक
विषय		
क्षेत्र/विषय		
पाठ्यचर्या लक्ष्य		
दक्षताओं का मानचित्रण		
सीखने के प्रतिफल		
अवधारणा की समझ हेतु कलाओं के विभिन्न घटकों का उपयोग		
प्रक्रियाएँ एवं कार्यनीतियाँ (500 शब्दों में लेख एवं अधिकतम 5 स्पष्ट तस्वीरें संलग्न करें)		
प्रयुक्त संसाधन		
आकलन		
अनुवर्ती गतिविधि		
समीक्षा		

1. *Samriddhi* - An Introduction

Samriddhi is a national-level competition for teachers organised under the aegis of Kala Utsav. Its objective is to showcase art-integrated teaching methodologies developed and implemented by teachers, based on the Secondary school curriculum in different subjects (Grades 9 to 12). Kala Utsav was launched in 2015 by the Department of School Education and Literacy, Ministry of Education, Government of India, with the aim of nurturing and showcasing the artistic talents of Secondary-level students and *Samriddhi* is a step taken towards fulfilling this objective. In alignment with the recommendations of the National Education Policy (NEP) 2020 and the National Curriculum Framework for School Education (NCF-SE) 2023, *Samriddhi* aims to recognise and encourage the efforts of those teachers who have successfully integrated art-based learning in different subjects experiences into curriculum delivery.

The Role of Art in the Development of an Individual

Art is the sum total of the experiences and influences of an individual and their society, which can be understood through philosophical, cultural and historical perspectives. An individual's geographical environment, social context and cultural understanding are reflected in their artistic expressions. This connection is not merely coincidental but is a fundamental aspect of the evolution of human civilisation.

In hilly regions, sculptures and architecture in stone and wood, such as the *Kath-Kuni* woodwork of Himachal Pradesh, *Likhai* stone carvings of Uttarakhand, and the distinctive ''*Khatamband*'' (खतमबंद) and ''*Pinjrakari*'' (पिंजराकारी) architectural style of Kashmir have developed. In the plains, pottery and painting traditions flourish, like *Madhubani* painting from Bihar, *Phulkari* from Punjab, and *Chikankari* from Uttar Pradesh. Coastal areas are known for crafts using conch shells, seashells, and fish motifs, as seen in the coastal parts of South India. In the desert regions, sand art and metal crafts are prominent—such as Rajasthan's colorful puppets, metalwork, and desert paintings. In any area, the local climate, the available natural resources, and geographical features not only influence the materials used in art but also deeply shape its color combinations, themes, techniques, and stylistic characteristics. Thus, each region develops a unique artistic identity that reflects its natural beauty, social traditions, and cultural values. The main aim of *Samriddhi* is to integrate the above examples with various subjects.

NEP 2020 and Art-integrated Education: A Transformative Vision

Art is not just an expression of aesthetics, but a carrier of human emotions, social values and cultural identity. The National Education Policy (NEP) 2020 embraces this comprehensive view, acknowledging the essential role of arts in fostering critical thinking, creativity and cultural awareness. The Policy encourages a holistic and multidisciplinary approach to education, where visual arts, performing arts, and other creative expressions are made integral to the curriculum and motivates to understand the environment around them and use local resources. The goal is not just to attain academic achievement but also to integrate the Indian Knowledge System for the overall well-being of students, personal development, and the cultivation of 21st century skills.

According to NEP 2020, "Art integration is a cross-curricular pedagogical approach that uses various elements of arts and culture as the basis for learning concepts across subjects."

This approach is especially significant in the Indian context, where each geographic region has rich and unique artistic traditions. It not only makes learning joyful but also instills a sense of Indianness in students by incorporating Indian art and culture into teaching.

Comprehensive Vision of Art Integrated Pedagogy

Art Integrated Pedagogy is an innovative and constructivist teaching methodology that emphasises learning through the arts and with the arts. It is a transformative educational philosophy that breaks the confines of traditional teaching methods, turning learning into a holistic and enjoyable experience.

In this approach, art is not just a supportive tool but a primary medium of learning and a key to understanding complex concepts across subjects. It operates at three crucial levels:

- **Cognitive:** Students comprehend abstract concepts more concretely through art, resulting in better memory retention.
- **Emotional:** Artistic activities foster emotional intelligence and offer diverse modes of expression.
- **Social:** Collaborative art activities promote teamwork, dialogue and cultural understanding.

The practice of Art Integrated Pedagogy is more than just using art—it is a comprehensive approach that cultivates deep appreciation, cultural pride, and understanding of the arts among learners. Experiences in both visual arts (painting, sculpture, clay modeling, paper crafts, mask making, heritage crafts, graphics, animation, etc.) and performing arts (music, dance, theatre, puppetry, filmmaking, cinematic arts, etc.) enhance not only conceptual understanding but also overall personality development. The most important aspect of the art integrated pedagogical approach is its ability to address the cognitive, socio-emotional, behavioral, and psychomotor domains of student development simultaneously. Thus, art becomes a primary resource for learning.

Features of Art-integrated Pedagogy

NEP 2020 defines pedagogy as an approach aimed at fostering critical thinking, creativity, and holistic development among students. Key features of Art-integrated pedagogy include:

1. **Integration of Art –** Effective blending of subject concepts with art forms.
2. **Student Participation –** Active involvement and hands-on learning.
3. **Experiential Learning –** Learning in real-life contexts.
4. **Development of Critical Understanding –** Deep thinking and analytical abilities.

Key Responsibilities of Teachers

1. **Cultural Mediator:** They connect with local artists, artisans, and community elders to incorporate traditional knowledge into modern curricula.

2. **Geographic Sensitivity:** Teachers must develop instructional strategies based on geographic contexts. For example, the rhythms in Hindustani Classical music can explain mathematical concepts. In this way, students can understand mathematics while enjoying music.

3. **Constructivist Approach:** In Art Integrated Learning pedagogy, teachers ensure the following constructive aspects:
   - Teaching is based on students' prior knowledge and experiences.
   - Practical learning through arts is always engaging.
   - Peer learning is encouraged.
   - Emphasis is placed on self-assessment and peer evaluation.

4. **Inclusive Education:** As per NEP 2020, teachers must support pedagogies that are inclusive and responsive to the diverse needs of learners.

Objectives of the *Samriddhi* Competition

By integrating creative expressions into core subjects, at the secondary level, teacher art integration can be implemented effectively in the following ways:

The *Samriddhi* competition aims to honor teachers who

- successfully integrate local geographical features and artistic traditions with modern educational methods.
- adopt student-centered, experiential, and inclusive teaching practices.
- foster critical thinking, creativity, and collaboration through the arts.
- contribute to the preservation and promotion of Indian traditional art and culture.
- integration of indigenous crafts/arts and toys and local resources in pedagogy to transact curriculum (embedded in IKS).
- engaging students joyfully and enhancement of critical thinking.
- consider arts as process than the product.

Thus, the *Samriddhi* competition not only encourages teachers but also plays a crucial role in realising the goals of NEP 2020 by strengthening the interconnectedness of education and culture.

Participation of students in different forms of Art Integrated activities.

2. Theme of *Samriddhi* 2025

The theme of *Samriddhi* 2025 is '**Inclusive Education Through the Arts**', a concept deeply embedded in the vision of National Education Policy 2020 which places equity and inclusion at the heart of all educational decisions. It calls for dismantling barriers that hinder participation and success for Socio-economically Disadvantaged Groups (SEDGs) which include girls and women, SC/ST/OBC and minority communities, learners with disabilities, students from remote and underserved regions, and children from economically marginalised backgrounds by integrating Art in the pedagogical processes. The policy emphasises sensitising students through inclusive school culture, curriculum, and pedagogy which incorporates human values like empathy, respect for diversity, non-violence, and global citizenship. It also stresses the importance of art and creative expression in unlocking students' full potential such as cognitively, socially and emotionally. (NEP 2020, 6.1)

Samriddhi aspires to empower educators to integrate art with inclusive pedagogies, making learning environments more accessible, engaging, and meaningful for every child, especially those at the margins. This aligns with NEP's vision to not only develop foundational literacy and numeracy but also cultivate critical thinking, problem-solving, and emotional intelligence in every learner. Inclusion is not a choice; it is a necessity. With its focus on inclusive education through the Arts, *Samriddhi* commits to an educational future where no learner is left behind. (NEP 2020, 6.20)

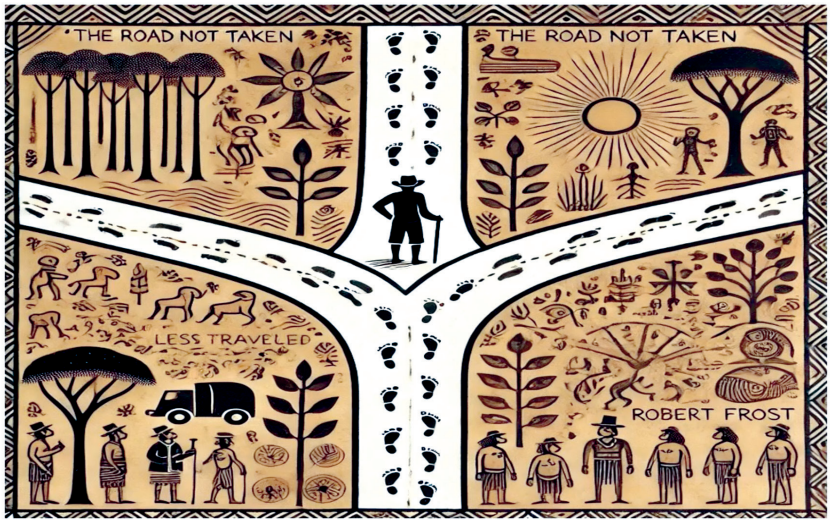

3. General Guidelines for Participants of *Samriddhi*

- Entries will be accepted in proportion to the total number of secondary teachers of each all States/UTs/K.V.S./N.V.S./E.M.R.S. and advance information of the approved number of entries will be sent to all Nodal Officers. More than one team can participates from big states.
- A team can consist of maximum two teachers, the main entry will be by a subject teacher, teaching in Secondary Grades (9-12) and another teacher (optional) can be the regular Visual Art/ Music/ Dance/Theatre teacher from same school.
- Teacher who have participated at the National level in Samriddhi 2024 will not be eligible to participate in Samriddhi 2025.
- Particpants will have to submit a project proposal in advance, which will be based on any of the subject areas of any stream offered in Grades 9 to 12 (Science, Humanities, Languages, Mathematics, etc.) finely amalgamated with the aesthetics of artistic expression of any fine art forms.
- The project proposal will be based on their classroom practice, duly certified by the Principal of the respective school.
- Any form of Art (Visual Art/Music/Dance/Theatre) can be integrated to present the demonstration.
- Use of ICT will be allowed.
- The project proposal of the presentation should be a write-up of not more than 500 words (Font– Times New Roman, Font size– 12), highlighting the process and the salient features of the respective presentation, supported by photographs (JPG format)/ video (mp4 format) links, etc., of the classroom practice. The maximum duration of the video should be 3–4 minutes.
- The medium of language of the project proposal and presentation should be either Hindi or English.
- All Teaching Learning Materials (TLM) which will be used must be mentioned in the plan/proposal. Level of students' engagement should also be clearly stated. The art form/props used must be age appropriate. For the National level competition, every team should have minimum 3 (three) and maximum 6 (six) props. Usage of props more than the defined limit may lead to adverse scoring.
- Time duration allocated for the presentation is 20 minute and 5 minute will be given for the interaction with jury. (Total– 25 minutes)
- The project proposal will be shared by the Nodal Officer after certifying the entries and will be shared with the National Coordinator, *Kala Utsav* at least 15 days before the competitions.
- All important guidelines, circulars, forms will be uploaded on the official website of *Kala Utsav* https://kalautsav.ncert.gov.in Kindly check the website regularly.

4. Eligibility for Participants of Samriddhi

- Teachers of Grades 9–12 of any government, government-aided and private school affiliated to any State or Central Boards, can participate in *Samriddhi*–2025.
- Schools of other central government organisations/local bodies, such as Central Tibetan School Administration (CTSA), Demonstration Multipurpose Schools (DMS). National Council of Educational Research & Training (NCERT), Railways, Border Security Force (BSF), Central Reserve Police Force (CRPF), Atomic Energy Commission, Army, Air Force, Cantonment Boards, New Delhi Municipal Council (NDMC), Kasturba Gandhi Balika Vidyalaya (KGBV), etc., located in the State/Union Territory will participate at the district and state level competitions, along with the other schools of the States/UTs.
- The Kendriya Vidyalaya Sangathan (KVS), Navodaya Vidyalaya Samiti (NVS), Eklavya Model Residential Schools (EMRS) will hold competitions amongst their own schools in respective organisations and their winning teams will participate as three separate teams at the National level. Thus, total teams participating in the National level will be 39 [28 States + 8 UTs + KVS+ NVS + EMRS].
- Participating teachers should have minimum two years of teaching experience in their respective schools.

Note

- All the Nodal Officers have to ensure that all schools participate in the District and State level competitions to enable selection of the competent and creative teachers. Adequate representation of rural segments with a special emphasis on participation of teachers from remote areas.
- All teams have to note that the prize money will be transferred directly into the winners' accounts and not given to the States/UTs/NVS/KVS/EMRS to ensure its timely distribution.

5. Evaluation Criteria - Competition of Art Integrated Pedagogy

Content/ Theme(5) Appropriateness of the Plan in Regard with Arts and Crafts as a Pedagogy(15)	Relevance of the Pedagogy (rootedness to environment/ culture/ local arts and crafts)	Students' Engagement in Art Experience	Processes	Presentation Skill	Total Marks
20	20	20	20	20	100

Prize Money

All the winners (1st, 2nd, and 3rd) will be awarded a cash prize*, a trophy, and a medal in each category. The cash award for winning teams of group events will be distributed equally among all the team members and in addition two special prizes (₹ 5,000/- cash amount) will also be given. The cash awards are as under:

First Prize	:	₹ 25,000/-
Second Prize	:	₹ 20,000/-
Third Prize	:	₹ 15,000/-
Special Prize	:	₹ 5,000/-

- The prize money will be equally divided among the team members.
- The prize money for each position will be directly transferred into the accounts of position holding teachers.
- All participants will be given certificate for National level competition participation.
- In case of participation more than one team from any State/UT/K.V.S./ N.V.S./E.M.R.S. not more than two prizes will be given to that State/UT/ K.V.S./N.V.S./E.M.R.S.

* It would be pertinent to mention that the awarded cash prize would be digitally transferred to the account of the winners.

6. Details of Forms to be Submitted by the Teachers

Form – A

Details	Subject Teacher	Art Teacher
Name (Capital Letters)		
Passport size photo		
Date of Birth		
Residential address		
Aadhar No.		
Email No.		
Mobile No.		
Designation		
Subjects and classes taught		
Name of the school & address		
UDISE Code of school		
Date of joining		
Number of years of experience in the current role		
Category: (Gen./ OBC/SC/ST)		
Physically Challenged (YES/NO)		
Bank Details:		
PAN No.		
Name of Bank:		
Account No.:		
IFSC Code:		
Photo of bank passbook or cancelled cheque		

Format of the Proposal for
Art Integrated Pedagogy Project Plan

Kindly attach the write-up of the proposal of the presentation process and important features.

(Font– Times New Roman, Font size– 12, Word count– 500 words max.)

Details of the Activity

Form – B

Teacher participants of this competition should fill up the details of the activity in the following format:

Details	Subject Teacher	Art Teacher
Subject		
Area / Theme		
Curricular goals		
Mapping of Competencies		
Learning Outcomes		
Use of different components of arts for the comprehension of the concept		
Processes and Strategies (write -up in 500 words and max 5 photographs with good clarity to be attached)		
Resources used		
Assessment		
Follow-up Activity		
Reflection		

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING